तद्भव

तद्भव

आधुनिक रचनाशीलता पर केंद्रित विशिष्ट संचयन

अंक-2, वर्ष-12
पूर्णांक-49, वर्ष-25
जुलाई-2024

संपादक
अखिलेश

लेजरटाइप सेटिंग
मोहिनी शर्मा
दिल्ली

मुद्रण
ग्रैंड प्रिंटिंग प्रेस
गोमती नगर, लखनऊ

मूल्य
एक प्रति : दो सौ रुपये
संस्थाओं के लिए : तीन सौ पचास रुपये
वार्षिक सदस्यता : चार सौ रुपये (डाक खर्च सहित)
संस्थाओं के लिए : सात सौ रुपये (डाक खर्च सहित)
विदेश के लिए : सत्तर डालर
आजीवन सदस्यता : दस हजार रुपये

सम्पर्क
18/201, इंदिरा नगर,
लखनऊ - 226016
उत्तर प्रदेश
दूरभाष : 6388234196
ई-मेल : akhilesh_tadbhav@yahoo.com

समस्त कानूनी विवादों का न्यायक्षेत्र लखनऊ, उत्तर प्रदेश होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक अखिलेश कुमार द्वारा 18/201, इंदिरा नगर, लखनऊ, उ.प्र. से प्रकाशित और ग्रैंड प्रिंटिंग प्रेस, 337 विजयीपुर, विशेष खंड, गोमती नगर, लखनऊ से मुद्रित

अनुक्रम

जीवन
अस निबहूर देसू-V **विश्वनाथ त्रिपाठी** 1

शताब्दी
आधुनिकता के आकर्षण और उसकी विडंबनाओं का संसार **अमितेश कुमार** 18

लेख
एक क्लासिक काव्य परंपरा का पुनर्गठन : औपनिवेशिक काल की पूर्वसंध्या पर राजस्थानी रीतिग्रंथ **दलपत सिंह राजपुरोहित** 41 / पाठ की अवधारणा : भारतीय और पाश्चात्य संदर्भ **आकांक्षा बरनवाल** 55

कहानियां
सपनों के बारे में बात करते हुए **संजय मनहरण सिंह** 69 / त्रियक **काव्या कटारे** 82 / बेर का कांटा **फरजाना महदी** 97

विशेष
यथार्थवाद और आधुनिकता : लू शुन और मुक्तिबोध की कहानियां **रमण सिन्हा** 117

लंबी कविता
17 दिन 422 घंटे 41 लोग; 12 मजदूर 26 घंटे **अरुण कमल** 131

कविताएं
कविताएं **अष्टभुजा शुक्ल** 137 / भीतर एक आकृति है जिसे शून्य कहते हैं **संगीता गुंदेचा** 143 / कविताएं **वसु गंधर्व** 150 / कविताएं **अनुपम त्रिपाठी** 158/ कविताएं **केतन यादव** 167

मीमांसा
बाजीचा ए अतफाल नहीं है ये एआई की दुनिया **अमित श्रीवास्तव** 172

संस्मरण
ले दे के अपने पास फकत इक नजर तो है **सिद्धार्थ सिंह** 181

स्मरणालोचन
हिंदी साहित्य में प्रयागवाद : IV **हरीश त्रिवेदी** 214

दास्तान
पांचवीं सिम्त **असगर वजाहत** 257

समीक्षाएं
अंतरंग और बहिरंग के बीच की आवाजाही **ए. अरविंदाक्षन** 305 / आंखों की कोर में ठहर गए आंसुओं की कविताएं **दुर्गा प्रसाद गुप्त** 310 / पृथ्वी को बचाने की कोशिश **बसंत त्रिपाठी** 314 / पर्सनल को सामने लाने का साहस **हितेंद्र पटेल** 319 / क्षोभ, करुणा और प्रतिरोध का व्यंजक कथारूप **भालचंद्र जोशी** 324 / अक्क महादेवी : एक ज्योतित और शांत रौशन कंदील **अनिल त्रिपाठी** 329

संपादकीय

यह कोई मौलिक नहीं बल्कि असंख्य बार कही गई बात है कि साहित्य की सफलता अंततः उसके प्रभाव में निहित होती है। संभव है किसी लेखक ने कोई रचना लिखने में अभूतपूर्व श्रम खर्च किया हो, शिल्प और भाषा का उच्चतम प्रतिमान स्थापित किया हो लेकिन यदि उसकी वह कृति समुचित प्रभाव नहीं छोड़ पाती है तो उसे सफल का दर्जा नहीं दिया जाता है। यह कुछ कुछ हमारे लोकतंत्र की तरह है : चुनाव लड़ने में एक दल ने कोई कसर नहीं छोड़ी थी, सब कुछ शानदार लग रहा था, प्रचार भी गजब का किया गया, शक्ति साधन संपन्नता किसी की भी कमी नहीं दिखती थी लेकिन परिणाम निराश करने वाले, काफी औसत स्तर के रहे। वजह इसके अलावा अन्य क्या हो सकती है कि उक्त पार्टी के तमाम तामझाम ने मतदाता पर आवश्यक प्रभाव नहीं पैदा किया। बहरहाल हम अपनी चर्चा को राजनीति के विस्तार में न ले जाकर साहित्य तक ही सीमित रखते हैं।

विख्यात कथाकार अंतोन चेखव की कहानी 'ग्रीफ' में उसका मुख्य पात्र एक स्लेज ड्राइवर आयोना पोतापोव दुःख से भरा हुआ है क्योंकि करीब एक सप्ताह पूर्व उसके जवान बेटे की मौत हो चुकी है। वह अपने दुःख को किसी से साझा करना चाहता है पर कोई उसकी व्यथा सुनने के लिए तैयार नहीं है। वह स्लेज में लगी अपने घोड़े के साथ सवारी के इंतजार में खड़ा है कि थोड़ी कमाई हो जाए। पहले एक अकसर, उसके बाद तीन नौजवानों की सवारी मिलती है। आयोना उनको अपना दर्द सुनाना चाहता है; कहता है, इस हफ्ते मेरे बेटे की मौत हुई है। सहानुभूति के बजाय उसको फटकार या उपेक्षा मिलती है या इस तरह का जवाब मिलता है, सबको एक दिन मरना होता है, तू गाड़ी तेज चला, जल्दी पहुंचा। पोतापोव दुबारा अपने दुःख की कहानी सुनाने का प्रयास करता है किंतु कोई सुनने के लिए तैयार नहीं। मायूस होकर अंत में वह अपने घोड़े को बेटे की मौत की, अपने दर्द की कहानी सुनाता है। कहानी सुनाने के उक्त दृश्य की मार्फत चेखव वस्तुतः यही कहना चाहते हैं कि हमारी पीड़ाओं में लोगों की दिलचस्पी नहीं रह गई है। देखा जा सकता है कि कहानी का यह सत्य आज के समय में कहीं ज्यादा चरितार्थ हो रहा है। आज हर किसी इंसान के पास, और इंसान ही क्यों पहाड़ों, वनों, पार्कों, नदियों आदि के भी पास, अपनी अपनी अनेक दुखद कहानियां हैं। ये सभी कहानियां कही जा रही हैं किंतु सुनी नहीं जा रही हैं। लेकिन यह भी होता है कि काफी लोग अपने दुखों की कथाएं सुनाते ही नहीं हैं। उनके पास अपनी अपनी तकलीफों की दास्तानें रहती हैं जिन्हें वे सुनाना चाहते हैं लेकिन